त्रि-शक्ति स्वरूपा क्रिया-इच्छा-वर्धन शक्तिपात दीक्षा

नवरात्रि का विशेष पर्व अपने भीतर से अज्ञानता, दोष, कमियों को बाहर निकाल कर अपने भीतर सुशक्तियों को आत्मसात करने का पर्व है। संसार विपत्ति का सागर है, उसमें से पूर्ण रूप से बाहर निकलने के लिये शक्तिवान होना अनिवार्य हैं, अपने भीतर शक्ति सामर्थ्य भरनी पड़ेगी, शक्ति ही अपने भिन्न-भिन्न स्वरूपों में विद्यमान होकर साधक के विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करती है।

स्वयं आत्म शक्ति का निरन्तर चिंतन कर उसमें वृद्धि की चेतना का विस्तार हो सके, यह ठीक उसी प्रकार है, जिस प्रकार एक श्रेष्ठ भवन की मजबूत नींव स्थापित करना। अपने भीतर भावों की स्तुति का तात्पर्य जीवन निर्माण की क्रिया से जुड़ा होता है। भवन यदि पूर्ण रूप से मजबूत है, तो चाहे कितने ही तूफान क्यों न आयें, झटके लगे, विपरीत स्थितियाँ आये, जीवन रूपी भवन को कोई क्षति नहीं पहुँचा सकती, क्योंकि इसका आधार भीतर की आत्म शक्ति से सम्भव हो पाता है।

प्रत्येक मनुष्य बहुआयामी होता है। इस जीवन में ही विभिन्न प्रकार के रंग, तरंग, उमंग है, तो कहीं हताश-निराशा, परेशानी भी है। जहां जीवन में सुख है, तो दुःख भी है, जीवन में पीड़ा है, तो आनन्द भी है। यह सारी स्थितियाँ मनुष्य को विचलित भी करती हैं और ज्यादातर व्यक्ति अपने जीवन की समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं कर पाते, उन्हें अनुकूल स्थितिया प्राप्त नहीं होती है, जिसके कारण वे निराशमय अंधकार में चले जाते है। इन सब बाधाओं और समस्याओं को अनुकूल बनाने का उपाय केवल और केवल शक्ति के द्वारा ही संभव है।

त्रि-शक्ति स्वरूपा शक्ति के माध्यम से जीवन की सफलता की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। धन, दौलत, पद-प्रतिष्ठा, स्वास्थ, पारिवारिक सुख, सुन्दर भवन, वाहन आदि अनेक सुखों से जीवन सम्पूर्णता से युक्त होता हैं। शक्ति के द्वारा ही जीवन की समस्त परिस्थितियों में विजय प्राप्त की जा सकती है। शक्ति उपासना रूपी शस्त्र से जीवन के समस्त शत्रुओं को परास्त कर जीवन के महासंग्राम में विजय प्राप्त होती है। शक्ति साधना ऊर्जा का मूल स्त्रोत है, जिससे व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रूप से बल, ओज और तेजस्विता से युक्त होता है। जो उसे जीवन के हर क्षेत्र में विजयी बनाने में सहायक सिद्ध होती है।

नवरात्रि और वसंत पंचमी के चेतनावान क्षणों में कर्म ज्ञान त्रि-शक्ति स्वरूपा महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के वरमुद्रा की चेतना से आप्लावित होकर अपने जीवन में पोषण, वर्धन, कालरूपी स्थितियों को समाप्त करने की क्रियात्मक शक्ति से युक्त होकर जीवन की विसंगतियों पर विजय प्राप्त करने की ऊर्जा नव वर्ष त्रि-शक्ति स्वरूपा क्रिया, इच्छा, वर्धन शक्तिपात दीक्षा से प्राप्त कर सकेंगे। जिससे साधक त्रयमयी शक्ति से युक्त होंगे। दीक्षा प्राप्त करने पर साधक की इच्छाये क्रियान्वित रूप में सम्पन्न हो सकेगी। जिससे जीवन में सुख-समृद्धि, आय वृद्धि, कर्म शक्ति, धन लाभ वैभव युक्त उमंग, उत्साह, प्रसन्नता, सम्पन्नता की प्राप्ति हो सकेगी।

न्यौछावर ₹ 1500/-

तीन पत्रिका सदस्य बनाने पर यह दीक्षा उपहार स्वरूप प्रदान की जायेगी।

इच्छुक दीक्षा प्राप्त करने वाले साधक का नाम एवं पता

नाम.....

.....

अपनी फोटो व तीन पत्रिका सदस्य का पूर्ण पता न्यौछावर राशि के साथ कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर भेजें।